देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115
Sept. 2025
Vol.-22, Issue-3(2)

Impact Factor
8.642

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

21वीं सदी का साहित्य : नव विमर्श

Special Issue Editor :
Dr. Poornima S.

Special Issue Co-Editor :
Dr. Anuradha P
Ms. V. Amudha

Editor :
Dr. Naresh Sihag
Advocate

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
#202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

70.	21वीं सदी के नारी विमर्श–रेत समाधि	पूर्णिमा. जे, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	393–397
71.	'बुद्धिमानों की मूर्खता' : सुरेंद्र शर्मा के व्यंग्य निबंधों में राजनीतिक विमर्श	प्रिया. एस, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	398–403
72.	21वीं सदी में तमिलनाडु स्थित बैंकों में राजभाषा कार्यान्वयन एवं हिंदी गृहपत्रिकाओं का प्रकाशन : एक नव विमर्श	श्री एम. संजीवी कनी, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	404–411
73.	पर्यावरण विमर्श : साहित्य में पारिस्थितिकी और प्रकृति चिंतन (बाल कहानियों के संदर्भ में)	वेंकट शिल्पा काकि, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	412–416
74.	21वीं सदी के आधुनिक हिन्दी उपन्यास बेहया में केंद्रित नारी	अमरजीत	417–422
75.	हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श और कथा साहित्य में स्त्री दृष्टि	Mrs. S. Subha	423-425
76.	भूमिका द्विवेदी कृत 'किराये के मकान' उपन्यास में चित्रित महानगरीय जीवन की समस्याएँ	आर. डी. निर्मला, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	426–430
77.	पर्यावरण विमर्श और 21वीं सदी के उपन्यास	संगीता कुमारी	431–435
78.	समकालीन साहित्य में किसान विमर्श	इ. जाक्कुलिन, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	435–442
79.	इक्कीसवीं शताब्दी में उपन्यास–साहित्य के समक्ष चुनौतियाँ	डॉ. के आनंदी	443–446

2. वही, पृष्ट संख्या 122
3. नासिरा शर्मा : कुईयाजान पृ सं 11, सामायिक प्रकाशन 3320–21, जटवाड़ा, नेताजी सुभाष मार्ग दरियागंज नई दिल्ली 110002, संस्करण 2023
4. वही, पृष्ट संख्या 83
5. संजीव– पांव तले की दूब, पृ. सं. 70, वांगदेवी प्रकाशन विनायक शिखर पॉलेटेक्निक कॉलेज के पास बीकानेर–3, संस्करण 2005, 2009, 2013, 2016
6. वहीं, पृष्ठ संख्या 66

ईमेल आईडी : sangitabic205@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Sept. 2025 Page No. : 436-442

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

समकालीन साहित्य में किसान विमर्श

इ. जाक्कुलिन, शोधार्थी
डॉ. अनुराधा पाकलपाटि, शोध निर्देशिका
सहायक प्रध्यापक, हिन्दी विभाग
वेल्स इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस टेक्नोलॉजी एंड एडवांस्ड स्टडीज (विस्टास), पल्लावरम, चेन्नई–600117, भारत

सार :

भारतवर्ष एक कृषिप्रधान समाज है और गावों का देश है। यहाँ पर लगभग 65 से 70 प्रतिशत आबादी कृषक हैं। इसी कारणवश हमारे देश को 'किसानों का देश' कहा जीता है, क्योंकि किसान देश की 'रीढ़ की हड्डी' है। किसान ही सारी दुनिया के लिए भोजन हेतु अनाज, फल, सब्जियाँ और चारे का उत्पादन करते आ रहे हैं। यदि किसान खेती नहीं करेंगे तो अनाज का उत्पादन नहीं होगा और जब अनाज का उत्पादन नहीं होगा तो हमारे भोजन की भी व्यवस्था नहीं होगी। बिना भोजन के हमारा जीवित रहना असंभव है। यदि कृषक लोग कीचड़ में पैर नहीं रखें तो हमरा खान-पान का व्यवस्थ पूर्ण नहीं होता। हमारे भूतपूर्व नेता लोग ने जैसे गाँधीजी, नेहरूजी, पटेलजी कृषक लोगों को अपार प्रोत्साहन दिए एवं उनके विकास में महत्वपूर्ण सहयोग दिये।

मूल शब्द : किसान, साहित्य, आर्थिक दशा, समाज, परिवार, परेशान, सरकार

प्रस्तावना :

मानव सभ्यता के विकास में कृषि की अमूल्य भूमिका रही है। मानव का अस्तित्व ही कृषि पर टिका है। खेती लोगों का मुख्य व्यवसाय था। खेती और खेती से जुड़े व्यवसाय लोगों के जीवन स्तर को निर्धारित करते थे। सभी व्यवसाय खेती पर ही केंद्रित थे। समाज में किसानों का बहुत सम्मान किया जाता था। लेकिन फसल का लाभ उसके लिए पर्याप्त नहीं था। कृषि कार्यों में लगे किसानों को अपना और अपने आश्रितों का पेट पालने के लिए कर्ज में रहना पड़ता

था। यद्यपि किसान कड़ी मेहनत करते थे, फिर भी वे गरीबी का जीवन जीते थे। समकालीन परिदृश्य को समझने के लिए जब तक हम प्रेमचंद के समय के किसान आन्दोलन को नहीं समझेंगे तब तक हम समकालीन साहित्य में किसान विमर्श को नहीं समझ सकते। इसका प्रसंग प्रेमचंद के गोदान, रंगभूमि, दो बैलों के गाथा, पूस की रात आदि में देखने को मिलता है।

किसान शब्दार्थ :

"हल चलाना" शब्द "श्रम" और "मज़दूर" शब्दों से संबंधित है। इसका अर्थ है परिश्रम और मेहनत। इसलिए, हम देखते हैं कि "हल चलाना" शब्द विशेष रूप से हल चलाने के पेशे के लिए प्रयोग किया जाता है। इन धरतीपुत्र किसानों को 'कृषक, काश्तकार, खेतिहर, भूमिपुत्र, अन्नदाता, हलधर और क्षेत्रजीवी' भी कहा जाता है।

हिन्दी साहित्य और किसान :

किसानों की समस्या को लेकर अनेक रचनाकारों ने अपनी रचनाओं में अपने अपने विचारनुसार प्रस्तुत किये हैं। साहित्यकार संजीव ने 'फांस' उपन्यास में गरीब किसान परिवार का चित्रण किया है, जिन्होंने खेती के लिए कर्ज लिया था और कर्ज बढ़ जाने पर निराश होकर आत्महत्या कर लिया। ऐसे किसान परिवारों के बीच घूम-घूम कर लेखक संजीव ने उनके दुख दर्द को अनुभव किया और उनकी पीड़ा को शब्दों और पात्रों के जरिए उपन्यास में प्रस्तावित किया। संजीव की उपन्यास लेखन की यह भूमिका उनकी सामाजिक प्रतिबद्धता की निशानी है। तभी तो 'फांस' एक जीवंत कृति बनी है। वैसे ही सूर्यदीप यादव के उपन्यास 'जमीन', पंकज सुबीर के उपन्यास 'अकाल में उत्सव' आदि में भी कृषक के समसामयिक हालात का वर्णन मिलता है।

प्राचीन तमिल साहित्य और किसान :

तमिल के कई साहित्यकारों ने कृषि और कृषक को श्रेष्ठ स्थान देकर उन्हें सम्मान दिया हैं जैसे कि तोल्काप्पियर, तिरुवल्लुवर, सुब्रमण्यभारती आदि उल्लेखनीय हैं।

बहुत प्राचीन तमिल साहित्य तोल्काप्पियम, खेती और खेती-बाड़ी स्थान को 'मरुदम' कहता है। (வயலும் வயல் சார்ந்த இடமும் மருதம் எனப்படும்)

तमिल के संत कवि तिरुवल्लुवर अपने दोहे में किसान को सम्मान देते हुए कहा कि "जो जीवित हैं हल चला, उनका जीवन धन्य।

झुक कर खा पी कर चलें, उनके पीचे अन्य ॥"[1] (1033)

(உழுதுண்டு வாழ்வாரே வாழ்வார்மற் றெல்லாம்

தொழுதுண்டு பின்செல் பவர்.)

अर्थात जो व्यक्ति खेती करता है और उससे जो प्राप्त होता है, उसी पर जीवनयापन करता है, वही व्यक्ति सम्मानपूर्वक जीवन जीता है, जबकि बाकी सभी लोग उसका अनुसरण करते हैं और दूसरों की पूजा करते हैं।

तमिल के क्रांतीकारी कवि सुब्रमण्यभारती ने कहा कि 'कृषि एवं धंधों को वंदना करें (உழவுக்கும் தொழிலுக்கும் வந்தனை செய்வோம்)'

कृषक जीवन के आधार :

कृषक जीवन के आधार भूमि, प्रकृति, बैल-गाय, कृषि संबंधित उपकरण, मेहनत और समाज हैं। कृषक भूमि से भावनात्मक और आर्थिक रूप से जुड़ा होता है, जिसे वह अपने जीवन का केंद्र मानता है। प्रकृति का निरंतर संघर्ष और उसके साथ तालमेल बिठाना, कृषि उत्पादन (फसलें और पशुधन), और अपने समाज के साथ जुड़ाव कृषक के जीवन को आधार प्रदान करते हैं।

सूर्यदीप यादव ने अपने उपन्यास 'जमीन' में उल्लेख किया है कि "जमीन किसी की निजी बपौती नहीं होती वह सार्वजनिक सर्व राष्ट्रीय बल्की विश्व की धरोहर होती है। धरती या जमीन की गोद और आकाश की छत्रछाया के बिना हवा की कोख से असंख्य जीव सृष्टि में जन्म लेते हैं और उसे हम मान्य रखते हैं। स्विकार करते हैं जिसे गैर की नाजायज चीज समझ कर अस्विकार करते हैं उस जमीन की उपज यह कृति है।"[2]

पारिवारिक परिदृश्य :

पूरी दुनिया में सबसे ज्यादा दुर्दशामय पारिवारिक परस्थिति किसानों की ही है। किसान सबके लिए तो अनाज उगा रहे हैं पर खुद भूखे मरने के लिए विवश हैं। किसान अपनी खेती से इतना नहीं कमा पाते कि वे अपने परिवार का ठीक-ठाक प्रबंध कर न सकें। किसान जितना परिश्रमी है पर उतना धैर्यवान नहीं है। उनके जीवन-यापन सुखदायी नहीं है। कभी वे भयानक अकाल की मार से मारा जाता है और कभी प्रलयकारी बाढ़ से। इन सभी आपदाओं से ज्यादा तो किसान पीडित हैं। किसान हमेशा से अभावग्रस्त और समस्याओं से जूझता रहा है। इसके बावजूद भी वह अपने कर्तव्य के प्रति ईमानदार रहा है। पंकज सुबीर ने अपने उपन्यास 'अकाल में उत्सव' में कृषक के पारिवारिक परस्थिति का जिक्र किया कि "कमला की तोडी बिक गई। बिकनी ही थी। छोटी जात के किसान की पत्नी के शरीर पर जेवर क्रमशः घटने के लिए ही होते हैं। और हर घटाव का एक भौतिक अंत शून्य होता है। जब परिवार की महिला के पास इन

धातुओं का अंत हो जाता है तब तय हो जाता है कि किसानी करने वाली बस यह अंतिम पीढी है, इसके बाद अब जो होंगे वह मजदूर होंगे। यह धातुएं बिक बिक कर किसान को मजदूर बनने से रोकती है।"[3]

आर्थिक परिदृश्य :

भारतीय किसानों की आर्थिक परिस्थिति चुनौतीपूर्ण है, जिसमें छोटे और सीमांत किसानों को अक्सर वित्तीय संकट और आय में कमी का सामना करना पड़ता है, जबकि कृषि क्षेत्र का सभी घरेलू उत्पाद में योगदान घट रहा है और गैर-कृषि क्षेत्र तेजी से बढ़ रहे हैं। इसका प्रसंग संजीव द्वारा लिखित 'फांस' उपन्यास में मिलता है। शिबू एक गरीब किसान है। उसके परिवार में उसकी पत्नी शकुन और दो जवान बेटियाँ सरस्वती और कलावती है। उसके पास दों बैल थे। लेकिन एक बैल मर जाने पर हल के एक तरफ बैल और दूसरी तरफ भैंस बांध कर शिबू जुताई करता था। जमीन के कर्ज़ से छुटकारा पाने के लिए अपनी पत्नी के गले से चाँदी की हँसूली निकाल कर कर्ज चुकाने को शिबू प्रयत्न करता है पर आर्थिक समस्याओं को सामना करते-करते अंत में निराश होकर कुएं में कूद कर अपना प्राण त्याग करता है। यह वर्तमान भारतीय किसान की दयनीय स्थिति है। प्राण त्याग करने से पहले शिबू ने कहा कि "इस देश का किसान कर्ज में ही जन्म लेता है, कर्ज़ में ही जीता है और कर्ज में ही मर जाता है।"[4] किसान देश की रीढ़ की हड्डी है, अन्नदाता है, पर सबसे बड़ी विडंबना यह है कि सब की भूख मिटाने वाला यह किसान स्वयं भूख से तड़पता हुआ आत्महत्या करने पर मजबूर हो रहा है। इसका सूक्ष्म विश्लेषण संजीव ने अपने उपन्यास 'फांस' में किया है।

शोषणग्रस्त जीवन :

आज किसान सरकार से विदेशी गाय, विदेशी बीज, विदेशी पौधे, विदेशी दवाइयां, विदेशी खाद नहीं, बल्कि खेती की सिंचाई के लिए थोड़ा-सा पानी चाहते हैं। पानी के बिना भारतीय कृषि व्यवस्था नष्ट हो रही है। किसान कर्ज लेकर फसल उगाने के बावजूद भी कभी खरीददार नहीं मिलता, अगर खरीददार मिलें तो उनसे कम दाम में खरीदकर वे अधिक मुनाफा कमाते हैं। किसान मिट्टी के मोल माल बेचने को मजबूर हो जाता है। न तो किसान कर्जा चुका पाता है, न अपने सपनों को साकार कर सकता है। इसी का संदर्भ संजीव द्वारा लिखित 'फांस' उपन्यास में शक्कर फैक्टरी का मालिक, माधव से गन्ने की खेती करने के लिए कहता है। उसे लाभ उठाने का सपना दिखाता है। मालिक फसल ले जाने का वादा करता है। गन्ने की खेती के लिए कर्ज देता है। लेकिन फसल तैयार होने पर न आता न गन्ने खरीदता है। फैक्टरी बंद हो जाती है। किसान माधव असहाय हो जाता है। माधव कर्जदार होने के कारण गन्ने की फसल को आग

लगा देता है और उस जलते खेत में खूदकर मर जाता है। फैक्टरी मालिक के लिए सरकार फैक्टरी बंद होने का ज्यादा मुआवजा घोषित करती है। लेकिन खेत बर्बाद होने के बाद प्राण त्यागने वाले किसान के परिवार को कम क्षतिपूर्ति देता है। यह है हमारे देश की विडंबना। इस संदर्भ में डॉ. विजय शिंदे कहते हैं कि - "किसानों की आत्महत्या अब आत्महत्याएँ नहीं है। यह सारी हत्याएँ हैं। इसका कोई ना कोई अपराधी है। किसी न किसी को इसकी सज़ा का पात्र मानना जरूरी है। दलाल, दुकानदार, ट्रांसपोर्ट, खरीददार, उद्योगी, नौकरीपेशा, प्रशासक, अधिकारी, अफसर, बैंकर, साहूकार, राजनेता, बिजनेसमैन, आदि । बहुत लंबी फेहरिस्त है। इन्हें किसानों का हत्यारा ठहराया जा सकता है। क्या देश के किसी कोर्ट में, न्यायालय में और न्यायमूर्ति में यह शक्ति है कि इन अपराधियों को हत्याओं का अपराधी मान सजा दें? न्यायालय और न्यायमूर्ति भी सरकारी मुलाजिम किसानों का पक्षधर नहीं है।"[5]

सरकार की सहायता :

किसान को आज भी राजनेता, साहूकार और प्रशासनिक अधिकारी धोखा दे रहे हैं। उन्हें कर्ज की समस्या के साथ-साथ बिजली, खाद, पानी आदी की समस्याओं से भी परेशान है। कभी भी किसानों की समस्याओं को समाप्त करने का प्रयत्न नहीं करते हैं। इसे गिरीश मिश्र, किसान और दूसरे संघर्षशील जन की आर्थिक दशा-दिशा, शीर्षक में उभार कर हंस पत्रिका में उल्लेख करते हुए कहा कि "1960-70 के दशक में हरित क्रांति आयी जिसमें खेती के क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़े। पंचवर्षीय योजनाओं के तहत नई कृषि नीति को बढ़ावा मिला। कृषि के उत्पादों में वृद्धि हुई। इसका फायदा हर श्रेणी को प्राप्त हुआ। वर्ष 1969 में इंदिरा गाँधी द्वारा बड़े बैंकों, बिमा कम्पनियों के राष्ट्रीयकरण से गांवों में ऋण आसान शर्तों पर उपलब्ध होने लगा। नाबार्ड ने वाणिज्यिक बैंकों की सहायता से ग्रामीण बैंकों की देशव्यापी श्रृंखला स्थापित की। मृतप्राय दस्तकारियों को जिन्दा किया गया। अनाज, उर्वरक, बिजली आदि पर सरकारी सब्सिडी तथा जवाहर रोजगार योजना से काम के अवसर पैदा हुए। इंदिरा आवास योजना के अंतर्गत दलितों तथा अन्य कमजोर श्रेणियों को सस्ते मकान उपलब्ध कराए गये।"[6] इस प्रकार 70 का दशक किसानों के लिए शुभ संकेत रहा। किसान खुशहाल जीवन बिताने लगे, शहरों की ओर किसानों का पलायन रुका।

वर्तमान में किसान प्राकृतिक आपदाओं, दलाली करने वाले लोग, सरकार की नई नीति आदि से त्रस्त हैं। किसानों के फसलों के उचित मूल्य न मिल पाना उनके लिए बहुत बडी समस्या है। किसानों के ऐसी समस्याओं को लेकर नयी आर्थिक नीति और कृषि क्षेत्र के नये नियम जिससे उत्पादों के दामों में वृद्धि और खेती की साख में गिरावट ने किसानों पर कर्ज का बोझ बढ़ाया। इस बोझ ने किसानों को आत्महत्या के लिए मजबूर किया। आज भी किसान बड़ी संख्या में

आत्महत्या कर रहे हैं। समस्याओं से परेशान होकर, जीवन में घोर हताशा के शिकार होकर अपनी जान दे रहे हैं। देविंदर शर्मा अपनी रचना 'वालमार्ट खुद एक बड़ा बिचौलिया है' में लिखते हैं - "हमारी सरकार का मानना है कि रिटेल में एफ डी आई के आने से कृषि व्यवस्था व कृषक जीवन में सुधार होगा। किसानों की आमदनी बढ़ेगी, बिचौलिए खत्म होंगे, उपभोक्ताओं को कम कीमत में सामान मिलेगा। साथ ही कृषि उपज की आपूर्ति में होने वाली बर्बादी पर अंकुश लगेगा।"[7]

कृषि का आधुनिक दशा :

भारत देश को हम कृषि प्रधान देश कहते है, लेकिन भारत देश के किसानों की दुर्दशा को देख कर उनके बच्चों ने खेती से मुंह मोड़ लिया है। वह पढ़ाई-लिखाई करके नौकरी की तलाश में महानगरों की ओर बढ़ रहे हैं। उनके खर्च के लिए किसान अपनी खेती बेच कर उनकी पढ़ाई और नौकरी पाने के लिए खर्च करके, खुद मजदूरी कर रहे हैं। इस संदर्भ में संजीव ने 'फांस' उपन्यास में जिक्र किया है। मोहन जब नाना से कोई काम की बात करता है, तब नाना उसे कहता है - "काम तो इन दिनों एक ही है। बालू, मिट्टी, ईट या खाद की ढूलाई सड़कों के किनारे सारी खेती वाली ज़मीन बिक चुकी है। मकान बन रहे हैं। आने वाले दिनों में सिर्फ बिल्डिंगे होंगी, चमचमाती सड़कें होंगी, चमचमाती गाड़ियाँ न हमारे तुम्हारे जैसे लोग होंगे। न खेती, न हमारी तुम्हारी बैल गाड़ियाँ ।"[8]

निष्कर्षतः समय के परिवर्तन, तकनीकी विकास के कारण उत्पादन साधन एवं जुताई तरीके में भी बदलाव आ गया है। इस नवीनतम प्रणाली को सीखकर कृषि में लागू करें तो अग्रसर आ सकते हैं। इसके कारण किसानों को समय के साथ फलों की खेती, सब्जी की खेती तथा दुग्ध उत्पादन को बढ़ाना होगा। किसानों की हालात सुधारने के लिए सरकारों को विशेष प्रयास करना होगा। किसानों की कर्ज माफी को लेकर पूरे देश में कदम उठाने का वक्त आ गया है। अगर किसान बर्बाद हुए तो देश के चमकते महानगर भी बर्बाद हो जायेंगे। इस प्रकार इन तमाम सुझावों और विचार-विमर्शों के माध्यम से किसान के बदहाल जीवन को खुशहाल बनाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. https://www.thirukkural.net
2. डॉ.सूर्यदीप यादव, जमीन, सरिता प्रकाशन, नाडियाद, 2006, पृ-भूमिका से उद्धृत है।
3. पंकज सुबीर, अकाल में उत्सव, शिवाना प्रकाशन, पृष्ठ -78
4. संजीव, फांस, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015, पृष्ठ- 15

5. डॉ. विजय शिंदे, अपनी माटी (त्रैमासिक ई-पत्रिका), 'फांस' से उठाता सवाल: खेती से किसान मन क्यों लगाये?, वर्ष-4, अप्रैल-सितम्बर - 2017, पृष्ठ - 12-13,.
6. गिरीश मिश्र, किसान और दूसरे संघर्षशील जन की आर्थिक दशा-दिशा, "हंस पत्रिका अगस्त 2006", पृष्ठ - 108
7. देविंदर शर्मा, वालमार्ट खुद एक बड़ा बिचौलिया है, अस्सी चौराहा, ई-पत्रिका, 04 .10. 2012
8. संजीव, 'फांस', पृष्ठ- 72, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015.